वर्ष– 04 अंक–01 अक्टूबर, 2023

संरक्षक
सतीश चंद्र दूबे, सांसद सदस्य, रास
प्रधान संपादक
शिवाजी कुमार चौधरी
संपादक मंडल
डॉ. सत्यप्रकाश तिवारी
डॉ. रिदू कुमार शर्मा
डॉ. मृत्यंजय कुमार
डॉ. अमित कुमार
डॉ. कुणाल
उपसंपादक
डॉ. कुमार गौरव
ब्यूरो प्रमुख
भी शंकर पांडे– दिल्ली
लालमोहन राय– पटना
विशेष संवाददाता
शैलेन्द्र पांडे (दिल्ली)
पप्पु (दक्षिणी दिल्ली)
ब्रजेश–लखनऊ (उ०प्र०)
इरूस मिंज–रांची (झारखण्ड)
नवीन तिवारी–हरिद्वार (उत्तराखंड)
शेखर–पश्चिम बंगाल
राजकुमार–मुम्बई (महाराष्ट्र)
आनन्द वर्धन, ब्यूरो उड़ीसा
कौशल किशोर सिंह –पटना
बिनोद राय–वाराणसी
विधि परामर्श
रमाकांत शर्मा (वरीय अधिवक्ता, पटना उच्च न्यायालय)
छायाकार– सोनी कुमारी
कला–हृदय नारायण ठाकुर
प्रधान कार्यालय– ए–127, लाजपत नगर, नई दिल्ली–110024
स्वामी शिवाजी कुमार चौधरी, प्रकाशक एवं मुद्रक– शिवाजी कुमार चौधरी द्वारा काजल प्रिंटिंग प्रेस, शिशी बोतल गली, दरियापुर पटना से मुद्रित एवं काजल प्रिंटिंग प्रेस शिशि बोतल गली, दरियापुर, पटना–800004 से प्रकाशित।
मो0–9334375496
email: anuragbharat55@gmail.com
shivajichaudharyoam@gmail.com
www.anuragbharat.com
सभी कानूनी विवाद पटना न्यायिक क्षेत्राधिकार के अन्तर्गत निपटाये जायेंगे। लेखकों द्वारा व्यक्त विचार उनके अपने हैं। इसकी जिम्मेवारी उनकी है एवं इसके लिये सम्पादक प्रकाशक की सहमति अनिवार्य नहीं है। कुछ छाया चित्र इंटरनेट/पत्र–पत्रिकाओं से साभार। उपरोक्त पद अस्थायी एंव अवैतनिक है। किसी भी आलेख पर आपति हो तो एक महीने के अंदर खंडन करें।

नोट :– इस पत्रिका में छपे किसी भी विज्ञापन के किए गए दावों के लिए प्रकाशक जिम्मेदार नहीं है।
RNI No. BIHHIN2020/80777

अनुक्रमिका

निःसंतान दंपति निराश न हो : डॉ. शशिवाला 07

08
बिहार में जातीय जनगणना रिपोर्ट देख भड़की बीजेपी, नीतीश के साथ कांग्रेस

11
इंदिरा का कार्ड, हिंदुओं का हक... जातीय जनगणना की 'काट'

अंदर के पन्नों पर

विस और लोस चुनाव में जातिगत जनगणना को कांग्रेस बनाएगी बड़ा चुनावी मुद्दा 12
जाति आरक्षण पर महात्मा गांधी से कितने अलग थे आंबेडकर के विचार? 13
अधिकतर मेडिकल कालेजों में 'घोस्ट फैकल्टी', छड॰ ने पकड़ा फर्जीवाड़ा 16
आयुष मेडिकल कॉलेज घोटाला, फर्जीवाड़ा कर ऐडमिशन लेने वाले 891 छात्र हुए निलंबित 17
विकसित भारत का आधार युवा शक्ति 20
स्टर्टाटअप का सुपर पावर बना भारत 25
महिला आरक्षण बिल का आगामी चुनाव में कितना फायदा उठा पाएगी बीजेपी 26
रेवड़ी संस्कृति का रोग, वित्तीय नियमों की उपेक्षा कर प्राप्त नहीं की जा सकती आर्थिक सक्षमता 33
इजरायल अे हमास में किसके साथ भारत? दुनिया किसे कर रही है सबसे ज्यादा सपोर्ट 36
कनाडा को आईना दिखाना आवश्यक 38
स्तन कैंसर जागरूकता माह– भारतीय महिलाओं में इसका खतरा अधिक 41
सच्चे किसान विज्ञानी थे एमएस स्वामीनाथन , जुनून के साथ कृषि को मजबूत करने का निभाया संकल्प 43
वैज्ञानिकों ने दी चेतावनी, बताए सोशल मीडिया की लत के खतरनाक प्रभाव 44
पीएम के प्रयासों से खेल शक्ति बनकर उभर रहा भारत 46
बिहार में जातीय जनगणना के साथ क्या मंडल 3.0 की शुरुआत हो गई? 48
वैश्विक पटल पर छाप छोड़ता भारत 51
श्री बाबू कहते थे स्वराज मांगा नहीं छीना जाता है 52
अपने दैनिक जीवन में स्वच्छता 55

निःसंतान दंपति निराश न हो : डॉ. शशिवाला

अवेटा आईवीएफ में अब इन विट्रो फर्टिलाइजेशन सेंटर (आईवीएफ) सुविधा शुरू कर दी गई है। जिन दंपतियों के शारीरिक कमी की वजह से बच्चे नहीं हो पाते हैं वह इसका लाभ उठा सकते हैं। गौरतलब है कि इन विट्रो फर्टिलाइजेशन (आईवीएफ) एक सहायक प्रजनन तकनीक है, जहां भ्रूण के उत्पादन के लिए एक प्रयोगशाला में एक अंडे को शुक्राणु के साथ जोड़ा जाता है। इस प्रक्रिया में एक महिला रोगी के अंडाशय को हार्मोनल दवाओं के साथ उत्तेजित करना, अंडाशय (डिंब पिकअप) से अंडों को निक. ालना और शुक्राणु को एक प्रयोगशाला में एक विशेष तकनीक के माध्यम से उन्हें निषेचित करना शामिल है। निषेचित अंडे (जाइगोट) के 2 से 5 दिनों के लिए भ्रूण संवर्धन से गुजरने के बाद, इसे एक सफल गर्भावस्था की स्थापना के लिए उसी या किसी अन्य महिला के गर्भाशय में डाला जाता है। इस तकनीक का उपयोग महिलाओं में बांझपन के प्रमुख कारणों (ट्यूबल क्षति, एंडोमेट्रियोसिस, खराब डिम्बग्रंथि रिजर्व, पीसीओएस आदि) या पुरुष कारक (असामान्य वीर्य पैरामीटर आदि) या दोनों वाले जोड़ों में किया जाता है।

अवेटा आवीएफ के निदेशक डॉ. शशिवाला ने इस मौके पर उन्होंने कहा कि देश में कई दंपति बांझपन की समस्या से जूझ रहे हैं। उन्होंने कहा कि आईवीएफ केंद्र खुलने से पटना और आसपास के शहरों में रहने वाले ऐसे सभी लोगों को लाभ मिल सकेगा जो संतान सुख से वंचित हैं। अभी तक यह बेहद जटिल और महंगा इलाज हुआ करता था, इसलिए अब अवेटा आवीएफ में शुरू की गई इस सुविधा से मध्यम वर्ग के दंपति भी अपना उपचार करा सकेंगे।

डॉ. शशिवाला ने कहा कि आज के दौर में ऐसे मेरीड कपल्स की संख्या ज्यादा बढ़ रही है जिनकी अपनी कोई संतान नहीं है। इस सुविधा से पुरुष बांझपन और महिला बांझपन दोनों की समस्याओं का निदान संभव है। डॉ. शशिवाला ने बताया कि गायनी विभाग पिछले 4 वर्षों से बांझपन वाले जोड़ों का प्रबंधन कर रहा है। इसमें बांझ दंपति का काम, ओव्यूलेशन इंडक्शन, फॉलिक्युलर मॉनिटरिंग, बांझपन के लिए लेप्रोस्कोपिक और हिस्टेरोस्कोपिक सर्जरी शामिल हैं। उन्होंने बताया कि यह विभाग इंडियन काउंसिल ऑफ मेडिकल रिसर्च की गाइडलाइन के अनुसार 45 वर्ष तक की महिलाओं और 50 वर्ष तक के पुरुषों के लिए यह सुविधा प्रदान करेगा। आईवीएफ केन्द्र में उपलब्ध सुविधाओं के बारे में कहा कि आईवीएफ केंद्र में पुरूष शुक्राणुओं की जांच हेतु एंड्रोलॉजी लैब ने कार्य करना शुरू कर दिया है और केन्द्र में अंतर्गर्भाशयी गर्भाधान (आईयूआई) की सुविधा भी उपलब्ध है। इसके अलावा इस केन्द्र में आईवीएफ प्रक्रिया भी शुरू हो चुकी है। उन्होंने बताया कि निकट भविष्य में अवेटा आवीएफ संतान से वंचित ऐसे माता–पिता का भी इलाज करेगा, जिनके शरीर में अण्डाणु या शुक्राणु नहीं बनते और जिन्हें स्पर्मदाता की आवश्यकता होती है।

निसंतान निवारण अभियान, गूंजेंगी किलकारियां

संतानसुख के लिए तरस रहे निसंतान दंपतियों की मन की मुराद पूरी होगी। शहर में आज कई अच्छे फर्टिलिटी क्लीनिक हैं, जहां आधुनिक चिकित्सा सुविधाओं और नई तकनीकों के जरिये इलाज किया जाता है। आईयूआई, आईवीएफ, इक्सी या फिर ईम्सी जैसी तकनीक से दंपति संतान सुख प्राप्त कर सकते हैं। जरूरत है समय पर सही इलाज की। जानकारी के अभाव में अधिकतर लोग इलाज के लिए इधर–उधर भटकते रहते हैं। इससे समय भी जाया होता है और पैसा भी। इसलिए उन दंपतियों को जागरूक करने के लिए राजधानी में इन दिनों निसंतान निवारण अभियान चलाया जा रहा है। इसके लिए विभिन्न फर्टिलिटी क्लीनिक में निशुल्क चेकअप कैंप लगाए जा रहे हैं। इनमें दंपतियों को जांच के साथ है नई तकनीकों, इलाज और समस्या से जुड़ी जानकारियां दी जा रही हैं। डॉ. शशिवाला का कहना है कि बांझपन शब्द अभिशाप नहीं है। बांझपन एक समस्या है, जो तेजी से फैल रही है। इसका इलाज संभव है। बांझपन की प्रमुख वजह तनाव, बिगड़ा हुआ रहन–सहन, प्रदूषण और देर से शादी या फिर शादी के बाद फैमिली प्लानिंग में विलंब करना है। जरूरी है कि वे समय पर विशेषज्ञों से इलाज करवाएं।

डॉ. शशिवाला के अनुसार हजारों निसंतान दंपतियों की सूनी गोद यहां आबाद हुई है। विदेशों में बड़े शहरों में टेस्ट ट्यूब में बार–बार असफल होने वाले दंपति इलाज के लिए शहर में रह रहे हैं। आधुनिक इलाज से निसंतान दंपतियों के सूने आंगन में किलकारियां गूंज उठीं हैं। देश के बडे शहरों और महानगरों में इलाज करवा चुके निराश दंपति यहां इलाज करवा रहे हैं और उन्हें सफलता मिल रही है।

By Dr Chetan

MENSTRUAL HEALTH AND NUTRITION A CLOSE RELATION

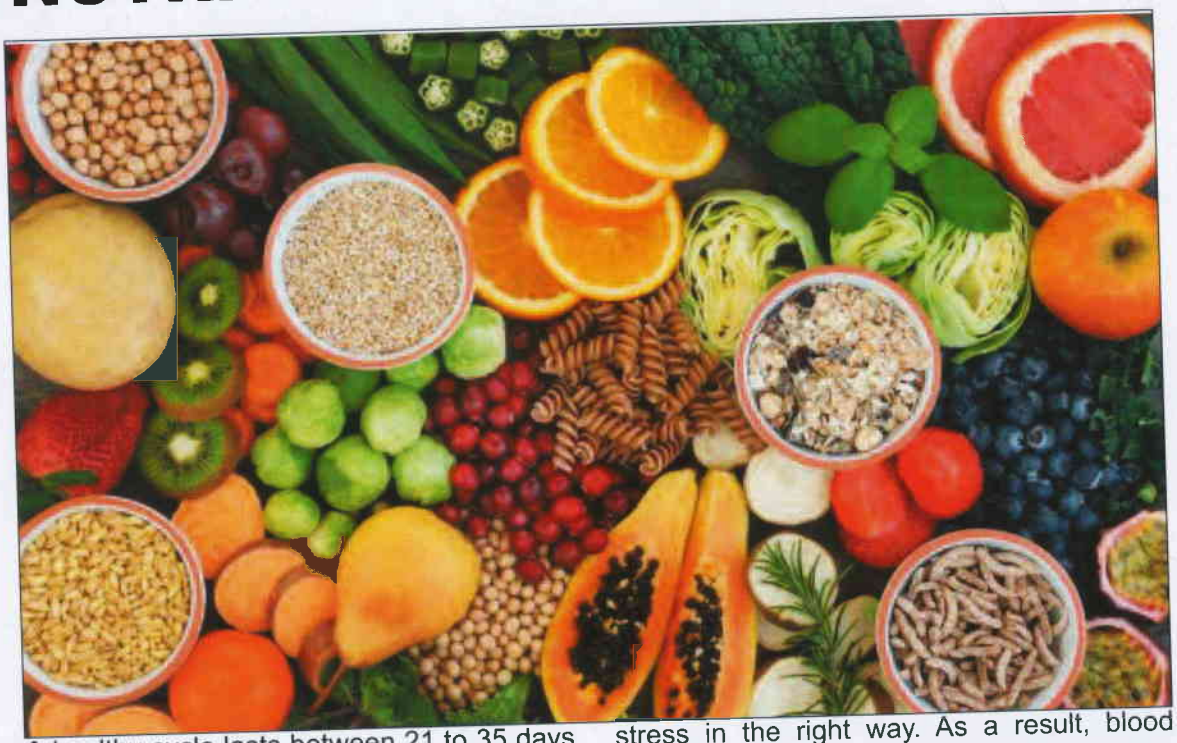

A healthy cycle lasts between 21 to 35 days. The menstrual cycle consists of three phases: the follicular phase, ovulation, and the luteal phase. Follicles produce a specific type of estrogen called estradiol. Estradiol's main role is to stimulate the growth of the uterine lining to prepare for a potential pregnancy. Estradiol also boosts feelings of happiness and can improve blood sugar control. The Follicular Phase lasts about 14 days or until ovulation occurs. . The egg ruptures out of the follicle and travels down the fallopian tube. Luteinizing hormone (LH) triggers this release. The progesterone produced by the corpus luteum prepares the uterine lining for a fertilized egg. The right amount of progesterone can reduce the chance of a heavy period. Progesterone also stimulates the thyroid, reduces inflammation, protects against cardiovascular disease, and can promote relaxation and sleep. If you feel stress, your body produces cortisol. Cortisol's job is to stimulate your body's cells to respond to the stress in the right way. As a result, blood pressure increases, blood sugar increases, and the immune system is stimulated. When your body is insulin resistant, your pancreas can affect your menstrual cycle health. It can stop ovulation and cause your ovaries to make too much testosterone. Not enough thyroid hormone can cause other hormone imbalances like insulin resistance and ovulation suppression. Underactive thyroid function causes hormones to be out of balance. It also can cause heavy periods.

Eating for a healthy menstrual cycle means eating nutrients that reduce inflammation and support your hormones. When chronic inflammation occurs, your body's immune system blocks hormone signaling. This hormonal imbalance can lead to heavy periods, skipped periods, PMS symptoms, or lack of ovulation. Foods that are high in fiber and rich in vitamins and minerals can help decrease inflammation. These foods can bring hormones back to their proper levels.

मूल्य : 20

युवाओं को समर्पित समाचार पत्रिका

RNI No. BIHHIN2020/80777

अनुराग भारत

राष्ट्रीय हिंदी मासिक पत्रिका

वर्ष : 4 अंक : 05 फरवरी : 2024

आत्मविश्वास से विपक्ष में बेचैनी

कृत्रिम प्रजनन तकनीकों 'एआरटी' के विकास की अनुमति : डॉ. शशिबाला

बिहार का इतिहास ही भारत का इतिहास रहा है : मनोज सिन्हा

प्रजनन चिकित्सा ने कृत्रिम प्रजनन तकनीकों 'एआरटी' के विकास की अनुमति : डॉ. शशिबाला

लूईस ब्राउन का जन्म भी शामिल है, जो 1978 में आई वी एफ के माध्यम से गर्भधारण करने वाला पहला बच्चा था।

एसटी आई बैक्टिरिया, वायरल या फंगल हो सकता है और पुरुषों और महिलाओं दोनों को प्रभावित कर सकता है।

प्रजनन चिकित्सा : पुरुष और महिला प्रजनन प्रणाली से सम्बंधित चिकित्सा की एक शाखा है। इसमें विभिन्न प्रकार की प्रजनन स्थितियाँ, उनकी रोकथाम और मूल्यांकन, साथ हीं उनके बाद के उपचार और निदान शामिल है। प्रजनन चिकित्सा ने कृत्रिम प्रजनन तकनीकों (एआरटी) के विकास की अनुमति दी है जिससे मानव बाँझपन पर काबू पाने में प्रगति हुई है, साथ हीं इसका उपयोग कृषि और वन्यजीव संरक्षण में भी किया जा रहा है। (ए.आई) और भ्रूण स्थानांतरण, साथ हीं जिनोम संसाधन बैंकिंग शामिल है। ऐसा माना जाता है की प्रजनन चिकित्सा का अध्ययन अरस्तु के समय का है, जहाँ वह 'हमेटोजेन्स प्रजनन सिद्धांत' के साथ आए थे, हालांकि साक्ष्य आधारित प्रजनन चिकित्सा का पता 1970 के दशक से चलता है। तब से, प्रजनन चिकित्सा के लिए कई मील के पत्थर रहे हैं, जिसमें लूईस ब्राउन का जन्म भी शामिल है, जो 1978 में आई वी एफ के माध्यम से गर्भधारण करने वाला पहला बच्चा था। प्रजनन क्षमता को प्रभावित करने वाली स्थितियाँ : प्रजनन चिकित्सा के एक महत्वपूर्ण हिस्से में पुरुषों और महिलाओं दोनों में प्रजनन क्षमता को बढ़ावा देना शामिल है। महिलाओं में बाँझपन या बाँझपन के कारण : 'ओवुलेटरी डिसफंक्शन, पॉलिसिस्टिक औवरी सिंड्राम (पीसीओएस) हाईपरगोनैडोट्रॉपिक हैपोगोनाडिज्म, हाइपोगोनैडोट्रोपिक हाइपोगोनाडिज्म 'ट्यूबर डिसफंक्शन, श्रोणी सूजन बीमारी, Endometriosis. पिछली नसबन्दी, पिछली सर्जरी, ग्रिवा या गर्भशय सम्बन्धी शिथिलता, पैदाइशी असमानता, फाइब्राउड, एशरमैन सिंड्राम, हार्मोनल मुद्दे : हाइपोथायराइडिज्म, अतिगलग्रंथिता, कुशिंग सिंड्राम जन्मजात अधिवृकिय अधिवृद्धि पुरुषों में बाँझपन या बाँझपन के कारणः शुक्राणु संख्या या कार्य में समस्या, गुप्त वृषणता, 'गुणसूत्र सूक्ष्म विलोपन, वृषण शीरापस्फीति, हाईपरगोनैडोट्रोपिक हाइपोगोनाडीज्म, हाईपरगोनैडोट्रोपिक, हाईपरगो नै डोट्रोपिक हाईपरगोनाडिज्म, ट्यूबर डिसफंक्शन, पैदाइशी असमानता पहले यौन संचारित संक्रमण, पुरुष नसबन्दी 'शुक्राणु वितरण में समस्या : शीघ्रपतन, प्रजनन अंगों को नुकसान, प्रतिगामी सखलन कुछ आनुवंशिक रोग महिला मूल्यांकन एक पूर्ण चिकित्सा इतिहास (एनामनेसिस) से शुरू होता है जो महिला के सामान्य स्वास्थ्य, यौन इतिहास और प्रासंगिक पारिवारिक इतिहास का विवरण प्रदान करता है।

प्रजनन चिकित्सा निम्नलिखित स्थितियों की रोकथाम

निदान और प्रबंधन से सम्बंधित है। यह अनुभाग मानव प्रजनन प्रणाली को प्रभावित करने वाली कई सामान्य स्थितियों के उदाहरण देगा : संक्रांमक रोग – प्रजनन पथ संक्रमण (आरटीआई) ऐसे संक्रमण है जो प्रजनन पथ को प्रभावित करते हैं। (आर्टिआई) तीन प्रकार के होते हैं –अंतरजातीय आरटीआई बैक्टीरिया की अत्यधिक वृद्धि के कारण होते हैं जो सामान्य रूप से मौजूद होते हैं। अंतरजात आरटी आई का एक उदाहरण वैक्टिरियल वेजिसनोसिस है। यौन संचारित संक्रमण (एसटी आई) यौन गतिविधि से फैलानेवाले संक्रमण हैं, आमतौर पर योनि सम्भोग, गुदा सेक्स, मौखिक सेक्स और शायद हीं कभी मैन्युअल सेक्स द्वारा कई एसटीआई का ईलाज संभव है, हालांकि, एचआईवी जैसे कुछ एसटी आई लाइलाज है। एसटी आई बैक्टिरिया, वायरल या फंगल हो सकता है और पुरुषों और महिलाओं दोनों को प्रभावित कर सकता है। प्रजनन कैंसर महिलाओं को प्रभावित करता है। स्तन कैंसर, अंडाशय कैंसर, गर्भाशय कर्क रोग, ग्रिवा कैंसर, प्रजनन कैंसर पुरुषों को प्रभावित करता है : प्रोस्टेट कैंसर, पेनाइल कैंसर, शुक्र ग्रंथि का कैंसर, पुरुष स्तन कैंसर, सौम्य प्रोस्टेटिक हाईपस्ट्रोफी

Give a flower bouquet honoured by dr. Amit kumar and dr. Shashi bala Director of Magadh cancer centre Dr. Ridu shatma.

Give a flower bouquet honoured by Medical Onchologist Dr. Amrendra kumar (Medanta) Director of Magadh cancer centre Dr. Ridu sharma.

Dr. Shivendra Kumar and Dr.
Cancer C

Give a flower bouquet by Dr. Ri
Diagnostic dr prabhat Ranjan,

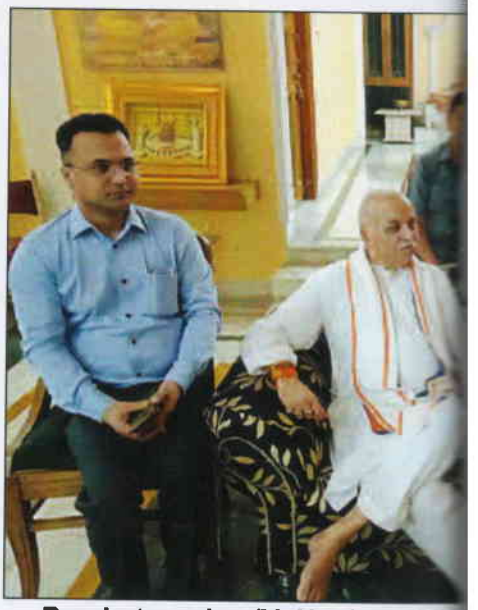

Pravin togariya (V. H. P), Dr. S
President I. M. A. Cpt v. S

डॉ. श्री कृष्ण सिंह फाउंडेशन द्वारा संचालित मां जगदम्बे निःशुल्क ब्यूटीशियन प्रशिक्षण केंद्र के प्रथम बैच के छात्राओं को सर्टिफिकेट वितरण समारोह ।

डॉ. श्री कृष्ण सिंह फाउंडेशन द्वारा संचालित मां जगदम्बे निःशुल्क ब्यूटीशियन प्रशिक्षण केंद्र के प्रथम बैच के छात्राओं को सर्टिफिकेट वितरण समारोह ।

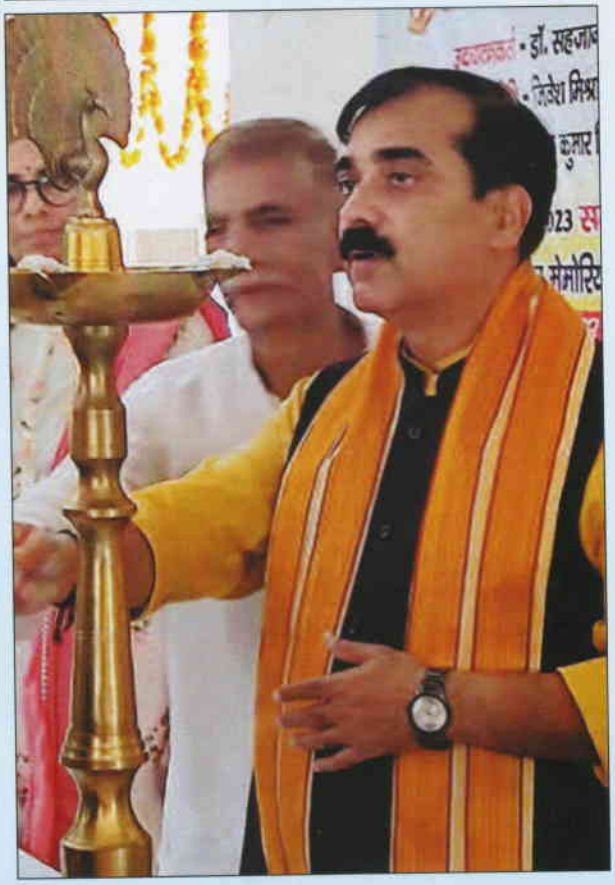

डॉ. श्री कृष्ण सिंह फाउंडेशन द्वारा संचालित मां जगदम्बे निःशुल्क ब्यूटीशियन प्रशिक्षण केंद्र के प्रथम बैच के छात्राओं को सर्टिफिकेट वितरण समारोह ।

निःसंतान दम्पतियों को अब आशा नहीं छोड़नी चाहिए : डॉ. शशिवाला

क्या निःसंतानता को ठीक किया जा सकता है? यह किसी भी संतानहीन दम्पती के सामने सबसे चिंताजनक प्रश्न है लेकिन निःसंतान दम्पतियों को अब आशा नहीं छोड़नी चाहिए। आधुनिकतम तकनीकियों से महिलाओं के लिए न केवल उनकी प्रजनन आयु के दौरान बल्कि रजोनिवृत्ति के बाद भी गर्भधारण करना संभव है। अब सवाल आता है, निःसंतानता क्या है? और एक दम्पती को चिकित्सा सहायता के लिए कब जाना चाहिए ? बिना किसी गर्भनिरोधक के इस्तेमाल से 12 महीने तक नियमित संभोग के बाद भी गर्भधारण नहीं होना निःसंतानता है ।

डॉ. शशिवाला

निःसंतानता दो प्रकार की होती है : प्राथमिक और द्वितीयक (सैकेण्डरी)।

प्राथमिक निःसंतानता : कभी गर्भधारण नहीं हुआ है।

सैकेण्डरी निःसंतानता : कम से कम एक बार गर्भधारण हुआ हो । विश्व स्तर पर अधिकांश जोड़े प्राथमिक बांझपन से प्रभावित होते हैं। निःसंतानता दुनियाभर में प्रजनन उम्र के पुरुषों और महिलाओं दोनों को प्रभावित कर सकती है, जिससे व्यक्तिगत पीड़ा और पारिवारिक जीवन में विघटन पैदा हो सकता है।

कुछ दम्पती निःसंतान क्यों होते हैं?

निःसंतानता का कारण महिला या पुरुष या फिर संयुक्त रूप से दोनों हो सकते हैं। कभी–कभी अस्पष्ट निःसंतानता भी कारण हो सकती है जो स्टेण्डर्ड जांच में सामने नहीं आती है। गर्भधारण के लिए मुख्य रूप से ओव्यूलेशन, निषेचन और आरोपण होना ही चाहिए, यदि इसमें से किसी में गड़बड़ी होती है तो निःसंतानता हो सकती है। आइए जानते हैं कि दम्पती में कौनसी समस्याएं निःसंतानता का कारण बनती हैं और स्वस्थ संतान प्राप्ति के लिए दम्पती के पास क्या उपचार विकल्प उपलब्ध हैं।

महिला निःसंतानता कई कारणों से हो सकती है

1. फैलोपियन ट्यूब से जुड़े विकार : ओव्यूलेशन के बाद अंडा फैलोपियन ट्यूब के माध्यम से अंडाशय से गर्भाशय तक पहुंचता है। ट्यूब की कोई भी बीमारी अंडे और शुक्राणु के मिलन को रोक सकती है। विभिन्न तरह के संक्रमण (आमतौर पर एसटीडी), एंडोमेट्रियोसिस, पैल्विक सर्जरी–ओवेरियन सिस्ट के लिए, जिसके परिणामस्वरूप फैलोपियन ट्यूब को नुकसान हो सकता है।

2. ओवरी की कार्यप्रणाली में व्यवधान / हार्मोनल कारण : सिंक्रोनाइज्ड हार्मोनल परिवर्तन माहवारी के दौरान होते हैं यह अंडाशय (ओव्युलेशन) से एक अंडे के निकलने और एंडोमेट्रियल लाइनिंग को बढ़ाने में अग्रणी भूमिका निभाते हैं जो फर्टिलाइल्ड एग (भ्रूण) को गर्भाशय में प्रत्यारोपित होने के लिए तैयार करने में मदद करता है। ओव्यूलेशन में व्यवधान निम्नलिखित स्थितियों में देखा जाता है–

'पॉलीसिस्टिक ओवरी सिंड्रोम (पीसीओएस) : यह महिला निःसंतानता का सामान्य कारण है। पीसीओएस में हार्मोनल असंतुलन ओव्यूलेशन की प्रक्रिया को नोर्मल नहीं होने देता है।

'कार्यसंबंधी हाइपोथैलेमिक एमेनोरिया : एथलीटों/पहलवान खिलाड़ियों में अत्यधिक शारीरिक मेहनत या भावनात्मक तनाव के परिणामस्वरूप एमेनोरिया (पीरियड्स का अभाव) हो सकता है।

'कम ओवेरियन रिजर्व : इसमें महिलाओं को गर्भधारण करने में कठिनाई का अनुभव हो सकता है क्योंकि अंडाशय में अंडों की संख्या कम हो जाती है।

'समय से पहले ओवेरियन विफलता : अंडाशय 40 वर्ष की आयु से पहले काम करना बंद कर देते हैं यह प्राकृतिक या बीमारी, सर्जरी, कीमोथेरेपी, या रेडिएशन के कारण हो सकता है।

3. गर्भाशय के कारण : गर्भाशय की असामान्य शारीरिक रचना– पॉलीप्स और फाइब्रॉएड की उपस्थिति प्रत्यारोपण में हस्तक्षेप कर सकती है और कभी–कभी सेप्टेट गर्भाशय गुहा जैसे दोष भी हो सकते हैं। यूनिकॉर्नट, बाइकोर्नट गर्भाशय और यूटेरस डिडेलफिस जैसी विसंगतियां भी निःसंतानता का कारण बनती हैं।

4. गर्भाशय ग्रीवा के कारण: कुछ महिलाएं गर्भाशय ग्रीवा के रोगों से पीड़ित हो सकती हैं जहां शुक्राणु असामान्य म्यूकस उत्पादन या पूर्व सर्वाइकल शल्य प्रक्रिया के कारण ग्रीवा मार्ग से गुजर नहीं पाते हैं।

पुरुष निःसंतानता के कारण

कम शुक्राणु या खराब गुणवत्ता वाले शुक्राणु या यह दोनों पुरुष बांझपन के 90 प्रतिशत से अधिक मामलों में जिम्मेदार हैं। शेष मामले शारीरिक समस्याओं, हार्मोनल असंतुलन और आनुवंशिक दोषों के कारण हो सकते हैं। शुक्राणु असामान्यताओं में शामिल हैं–

1. ओलिगोस्पर्मिया (शुक्राणुओं की कम संख्या) एजूस्पर्मिया (शून्य शुक्राणु) : शुक्राणुओं की संख्या 15 मिलियन प्रति एमएल से कम है तो यह ओलिगोस्पर्मिया जबकि स्खलन में शुक्राणु शून्य हैं तो यह एजूस्पर्मिया कहा जाता है।

1

विद्या प्रेमियों का तीर्थस्थल। 80 हजार पुस्तकों का केंद्र है श्री कृष्ण सेवा सदन पुस्तकालय मुंगेर।

अवेटा आईवीएफ के डायरेक्टर डॉ. शशिवाला अपने पति डॉ. अमित कुमार के साथ।

डॉ. श्री कृष्ण सिंह फाउंडेशन द्वारा संचालित ट्यूटिशन प्रशिक्षण सेंटर की छात्राएं होली समारोह में ।

मां जगदम्बे ब्यूटीशियन

मां जगदम्बे ब्यूटीशियन